Vol : 4
April, 2018 - February, 2020

बचपन और रेलगाड़ी

Safe Society
Empowering The Marginalised

अनुक्रम

1. निदेशक की कलम से
2. कार्यक्रम अधिकारी
3. स्टेकहोल्डर फीडबैक
4. कार्यक्रम गतिविधियाँ
—स्वास्थ्य शिविर
—अक्कड़—बक्कड़ बम्बे गो कला प्रदर्शनी
—जे.जे. एक्ट प्रशिक्षण
—कला आधारित प्रक्रियाऐं
—"अविशिष्ट बचपन" पुस्तक प्रकाशित
—अन्त्योदय
—जन्मोत्सव
5. केस स्टडी
6. क्षमतावर्धन गतिविधियॉ
7. सेफ चाइल्ड प्रोजेक्ट टीम
8. अर्जित उपलब्धियां
9. आभार
10.सम्पर्क

रेलगाड़ी में सफर करने का आनंद आपने लिया होगा लेकिन शायद ही कभी आपने गौर किया होगा कि स्टेशन व ट्रेन के बीच मासूम बच्चों की जिंदगी कहीं खो गई है। खेत—खलिहान व शहरों से गुजरती हुई रेलगाड़ी जब स्टेशन पर रूकती है तो आपकी निगाह उन बच्चों पर जरूर ठहरी होगी, जो रेलवे ट्रैक पर पानी की बोतलें इकट्ठा करते हैं या उन बच्चों की टोलियों को देखा होगा जिनके गंदे—मैले कपड़े उन की बदहाली बयां करते हैं। हाथ में गुटखा—खैनी का पाउच लिए ट्रेन की बोगियों में बेचते हैं देश के ये नौनिहाल। इन्हें स्कूलों में होना चाहिए लेकिन पापी पेट के कारण यहां इनकी जिंदगी के हिस्से में केवल ट्रेन की सीटी ही सुनाई देती है। इन बच्चों का जीवन हर रोज सुबह पांच बजे से शुरू होता है, स्कूल की घंटी नहीं ट्रेन की सीटी सुन कर झुंड में निकल पड़ते हैं इन के कदम और ट्रेन की बोगियों में गुटखा—खैनी बेच कर अपने घर का पेट पालते हैं । स्टेशन में रहने वाले बच्चों का उम्र तो बढ़ता है लेकिन उनका भविष्य यहां अंधकारमय है। रेलेवे स्टेशन में कठिन परिस्थितियों में रह रहे बच्चों के लिए काम करने वाली स्वयं सेवी संस्था सेफ सोसाइटी ऐसे बच्चों के पुनर्वास के लिए कार्य कर रही हैं। रेलवे स्टेशन पर दर्जनों बच्चे जो प्लेटफार्म पर भीख मांगते हैं और यही पर रहते हैं, इन बच्चों के माता—पिता व घर का पता नहीं हैं। ये बच्चे ट्रेन व प्लेटफार्म में ही अपनी जिंदगी बिताते हैं। गुजर बसर के लिए ऐसे बच्चे ट्रेनों में घूम—घूम कर गुटखा बेचते हैं। सेफ सोसाइटी ऐसे बच्चों के साथ 2015 से कार्य कर रही हैं ।

निदेशक, विश्व वैभव शर्मा
सेफ सोसाइटी, गोरखपुर

अनुसंधान एवं अध्ययन अधिकारी ब्लॉग

सेफ सोसाइटी द्वारा पिछले पॉच वर्षों की यात्रा में सड़क व रेलवे स्टेशन पर गुजर–बसर करने वाले बच्चों के लिए सुरक्षा तंत्र पुनः सशक्त करने के संदर्भ में, इस वैश्विक समस्या के बहुत से पहलुओं पर कार्य किया गया। पाल हेमलिन फाउण्डेशन (PHF) के सहयोग से चल रहे प्रोजेक्ट का किरणकेन्द्र पिछले दो वर्षों से बच्चों के सर्वांगीण विकास, उनके घर से भाग जाने/भटकने के मूल कारणों एवं उनके समाधानों पर केन्द्रित रहा। बच्चों को उनके परिवारों से वापस मिलाना, उनके घर से भाग जाने के कारणों पर शोध, उनके परिवारों के परिस्थितियों का आंकलन जैसी गतिविधियॉ तो जारी ही रही, साथ ही ABP, चिकित्सा शिविर, कला प्रदर्शनी, अंत्योदय पर गतिविधि, फिल्म निर्माण(Movie Production), सामाजिक विधिक संकलन पुस्तक लेखन–अविशिष्ट बचपन, जे.जे. एक्ट पर प्रशिक्षण इत्यादि करायी गयी। शोध के द्वारा निकले परिणामों से अनेक रणनीतियॉ बनायी गयी एवं बच्चों के मनो–सामाजिक विकास के लिए कला आधारित प्रक्रियाऐं (ABP), ध्यान, खेल–खेल में सिखना, बच्चों के समूहों का गठन इत्यादि गतिविधियाँ भी करायी गयीं। परियोजना के आरम्भ अप्रैल 2015 से जनवरी 2020 तक हम लोगों ने 524 बच्चों का बचाव/मुक्त कराते हुए उनके परिवारो से उनका पुर्नमिलन करा चुके हैं। हमारे आंकलन के अनुसार बच्चों के घर से भागने का मुख्य कारण मॉ–बाप का सही व्यवहार न होना हैं। 28 प्रतिशत बच्चें अभिभावक के अनुचित व्यवहार के कारण परिवारों से भागे हैं, 21 प्रतिशत बच्चों की तस्करी हुई हैं। प्रचलन का विश्लेशण करने के लिए हमने अपने शोध कार्य को अलग–अलग अवधियों में बॉट लिया हैं।

स्टेशन पर बच्चों का कारण विश्लेषण

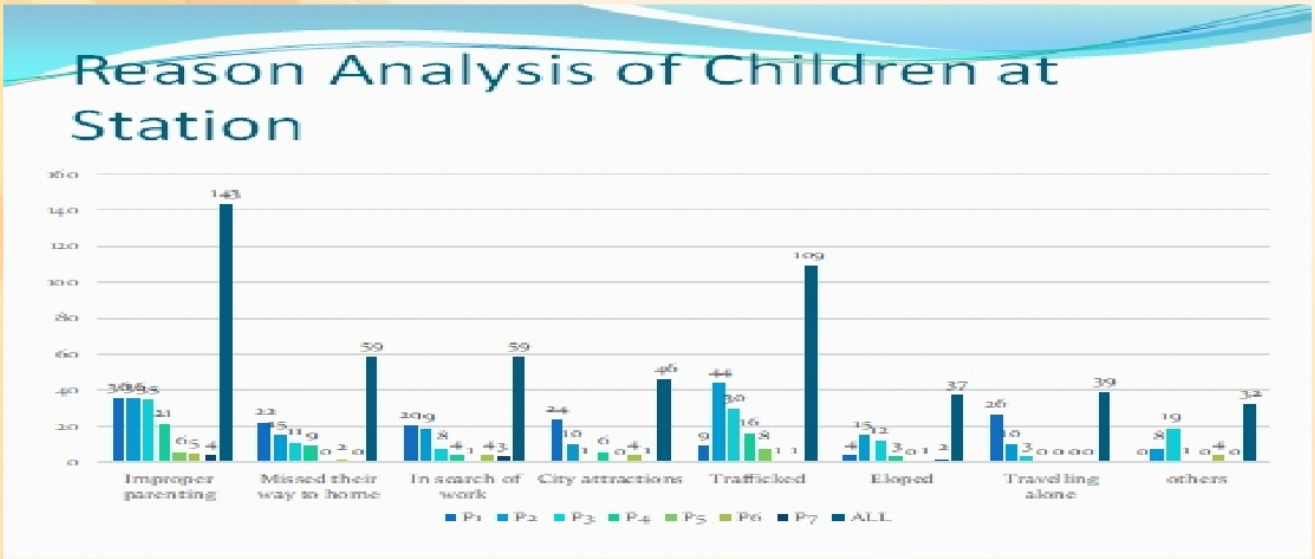

जैसे कि period P1- P1(अप्रैल 2015 – जनवरी 2016),Period 2nd –P2(फरवरी 2016- जुलाई 2016), Period 3rd –P3(अगस्त 2016- मार्च 2017), Period 4th –P4(अप्रैल 2017- सितम्बर 2017), Period 5th –P5(अक्टूबर 2017- मार्च 2018), P6(अप्रैल 2018- सितम्बर 2018), P7(अक्टूबर 2018- फरवरी 2019), बिहार के सीमावर्ती क्षेत्र जैसे की पश्चिम चंपारण इत्यादि से सर्वाधिक बच्चे(190) घरों से आए हैं। गोरखपुर जिले से दूसरे स्थान पर सर्वाधिक बच्चे (79) प्राप्त हुए। हमने इन बच्चों को AHTU, GRP, RPF व चाइल्ड लाईन को सफलतापूर्वक सौंप दिया।

ट्रैफिकिंग स्थानों का प्रतिशत

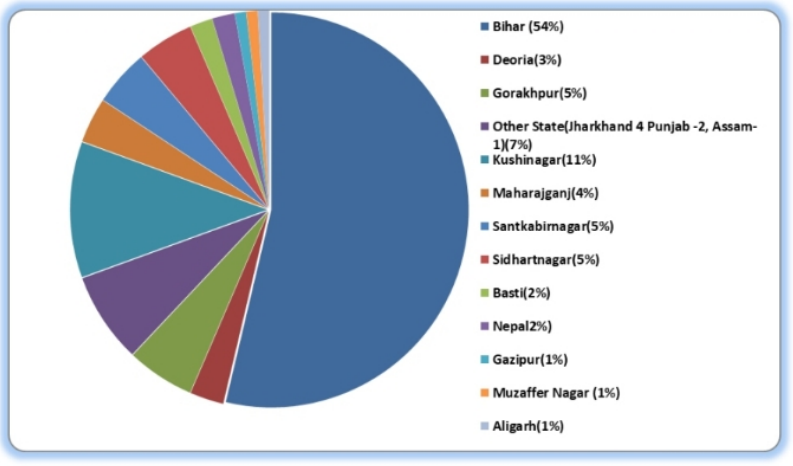

हम इनके परिवारों में भी गये और उनकी आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों को भी जानने का प्रयास किये। शोध में समस्या कि जड़ को पहचानने के बाद हमने इन बच्चों को अपने घरों पर ही रोके रखने की भी योजना बनायी व क्रियान्वित करना भी शुरू किया जो मूल रूप से बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के तरिको एवं अभिभावको के आजिविका से संबंधित हैं। इसके क्रियान्वयन से परिणाम भी आने लगे हैं। इसी के अंर्तगत स्टेशन पर रहने वाले 7 युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान किया गया एवं संगठित क्षेत्र में रोजगाार करने के योग्य बनाया गया। जागरूकता फैलाने के क्रम में हमने 2 फिल्मों का निर्माण फ्रांस से आयी हुई टीम के तकनीकि सहयोग से किया। ये फिल्म बाल मजदूरी एवं बाल तस्करी पर आधारित हैं एवं **विश्व की सर्वश्रेष्ठ सामाजिक फिल्म** (प्रशंसक वर्ग) सहित अनेको पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं। इसी क्रम में बच्चों के अधिकार, अभिभावक के कर्तव्य तथा प्रशासनिक अमले की जिम्मेदारी बताती हिन्दी में सरल तरीके से सविस्तार समझाती पुस्तक **''अविशिष्ट बचपन''** का भी प्रकाशन किया गया। हम अपनी टीम के सदस्यों का क्षमतावर्धन भी समय–समय पर करते रहे हैं। सड़क पर गुजर–बसर करने वाले बच्चों के द्वारा चुने गये कबाड़ के कृत्य में परिवर्तन लाते हुए, कबाड़ से कलाकृतियॉ बनाना सिखा कर बच्चों को उनके बीच दिलचस्पी बढ़ाते हुए रोजगार से जोड़ा गया। इनके उत्साहवर्धन में भव्य प्रदशर्नी गोरखपुर विश्वविद्यालय के संगीत एवं कला विभाग में आयोजित की गयी। सड़क के किनारे गुजर–बसर करने वाले परिवार तथा बच्चों को सामुदायिक रेडियो लाउडस्पीकर 90 एफ. एम. पर लाकर उनसे बातचीत करके एवं सांस्कृतिक गतिविधियां करा उन्हें मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास जारी हैं। समय–समय पर जरूरी प्रशिक्षण देकर शहर में बड़े मंच का आयोजन कर इन बच्चों के प्रति समाज का ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास अनवरत चल रहा हैं।

अनुचित पालन–पोषण विवरण

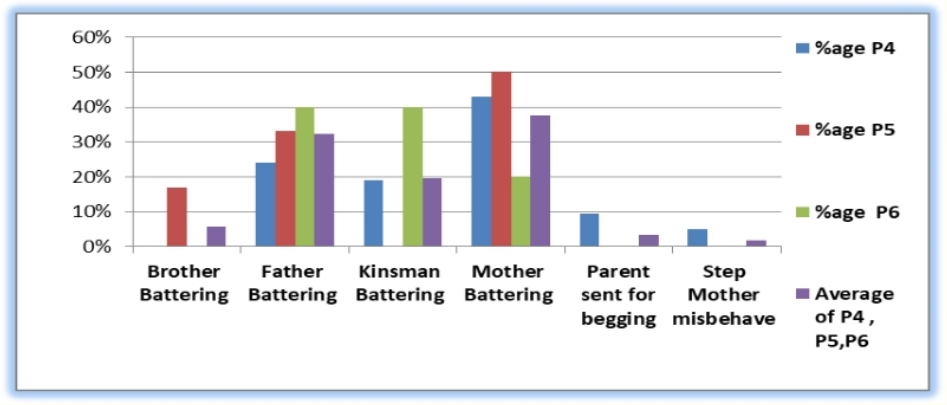

ब्रजेश चतुर्वेदी
प्रोग्राम मैनेजर (चाइल्ड प्रोजेक्ट)

अखबारी पन्नों से

हिंसा व उन्माद की राजनीति के खिलाफ फिल्मों ने किया सचेत

NEXT CITY

गोरखपुर फिल्म फेस्टिवल के दूसरे दिन दिखाई गई गोरखपुर के बाल मजदूरी की कहानी

पर्दे पर मजदूरी देख सिसक उठे स्टूडेंट्स

दैनिक जागरण

जन-गण-मन

भूले-भटके बच्चों को राह दिखा रहीं शर्मिला

पटरी किनारे लगती है क्लास

गलत परवरिश से माता-पिता से छूट रहा बच्चों का साथ

अमर उजाला

'कूड़े' को सोना बनाने का हुनर रखते हैं ये

04 uttarpradesh hindustantimes

Letting underprivileged kids speak their mind...on air

2 दैनिक जागरण गोरखपुर, 8 सितंबर 2018

कबाड़ के सामान से बेसहारा बच्चों ने बनाई कलाकृतियां

THE TIMES OF INDIA, VARANASI
MONDAY, SEPTEMBER 10, 2018

Tale of rags to art: Ragpickers' kids showcase their craft

Arjumand Bano | TNN

2 दैनिक जागरण गोरखपुर

एक नजर में

बाल कल्याण अधिकारियों को बताई गई जिम्मेदारी

सेफ सोसाइटी की गतिविधियाँ

स्वास्थ्य शिविर

सेफ सोसाइटी द्वारा रेलवे स्टेशन के पास स्लम में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें रेलवे स्टेशन के आसपास के परिवारों का इलाज कराया गया व दवा वितरित, टीकाकरण किया गया तथा स्टेशन परिसर के अंदर के परिवारों को साफ–सफाई के बारे में बताया गया।

अक्कड़–बक्कड़ बम्बे गो कला प्रदर्शनी

रेलवे स्टेशन पर रहने वाले बच्चों के द्वारा प्लेटफार्म तथा फुटपाथ के आसपास कूड़े और बोतले इक्कठा करने का कार्य किया जाता रहा हैं। इससे उनको कबाड़ बेच कर कुछ 10–12 रूपये की आमदनी हो जाती थी। इन पैसो का वे नशे में उपयोग करते थे। सेफ सोसाइटी ने कूड़ा बीनने वाले इन बच्चों के साथ रचनात्मक सोच अपनाते हुए उनके द्वारा चुने गए कबाड़ से रोजगार बनाने के लिए, कबाड़ में चुने बोतलो को क्रॉफ्ट का रूप देना शुरू किया। बच्चों की रूची बढ़ती गया और गोरखपुर विश्वविद्यालय के संगीत कला विभाग के साथ मिलकर इनके द्वारा बनाए गए क्रॉफ्ट का भव्य प्रदर्शनी लगायी गयी। इस समय शहर में धर्मशाला में स्टाल लगा कर उन बच्चों द्वारा अपने बनाये क्रॉफ्ट बेचे जा रहे हैं।

जे.जे. एक्ट प्रशिक्षण

किशोर न्याय कानून के बारे में ज्यादा से ज्यादा, बारिक से बारिक जानकारी लोगो को होना आवश्यक हैं। जिम्मेदार पदों पर रहने वाले लोगो का प्रशिक्षण की महती आवश्यकता देखते हुए सेफ सोसाइटी ने जी.आर.पी. पुलिस तथा आर.पी.एफ. पुलिस, रेलवे अधिकारीयों तथा मिडिया के साथ समय–समय पर प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में बच्चों के भागने की घटनाओं को लेकर जब सेफ सोसाइटी ने अपनी पड़ताल शुरू किया तो यह महसूस किया कि सिविल पुलिस और थानो पर बाल कल्याण अधिकारी का प्रशिक्षण जे.जे. एक्ट में होना बहुत जरूरी हैं। मार्च, 2019 व फरवरी, 2020 में जिले स्तर पर सभी थानो के बाल कल्याण अधिकारी का तीन दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। जिसमें वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ. सुनील कुमार गुप्ता, पुलिस अधीक्षक (अपराध) श्री अशोक कुमार वर्मा, डॉ0 एम0एल0 गुप्ता सदस्य बाल कल्याण समिति गोरखपुर, किशोर न्याय बोर्ड चयन समिति के पूर्व सदस्य डॉ. ओंकारनाथ तिवारी, हाई कोर्ट वकील–आलिमा जैदी व सेफ सोसाइटी के सदस्य उपस्थित रहे।

कला आधारित प्रक्रियाओं का प्रशिक्षण

ABP एक ऐसी प्रकिया हैं जिसके माध्यम से बच्चों की आन्तरिक भावनाओं से अवगत हुआ जाता हैं। इसके लगातार प्रयास से नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर बच्चों को बड़े सहज भाव से ले जाए जाने का प्रयास किया जाता हैं। फुटपाथ के किनारे जीवन बसर करने वाले बच्चों के साथ यह विधि बहुत कारगर हुई हैं। इसमें खेल–कूद, हास–परिहास, वाद–संवाद, रंग–भाव सभी का क्रमिक मिश्रण किया जाता हैं। सेफ सोसाइटी द्वारा इन बच्चों पर ABP का प्रयोग काफी सफल रहा हैं। सेफ सोसाइटी ने ABP थेरिपी के विशेषज्ञों द्वारा बीते एक वर्ष में चार बार अपने सदस्यों को प्रशिक्षित किया, जिससे कि हमारे सदस्य इस विधि को बच्चों के उज्जवल भविष्य हेतु अच्छी तरह से प्रयोग कर पायें।

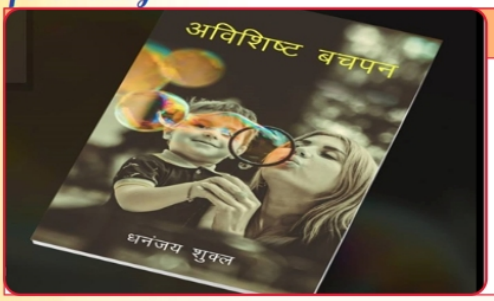

"अविशिष्ट बचपन" पुस्तक प्रकाशित

सभी हितधारकों के लिए एक संसाधन दस्तावेज के रूप में "अविशिष्ट बचपन" नामक पुस्तक प्रकाशित किया गया है यह पुस्तक बालक के सही परिदृश्य के बारे में पाठकों को जागरूक करती है और वर्तमान परिदृश्य में उनकी भूमिका को खोजने के लिए विभिन्न प्रश्नों के बारे में सोचने के लिए उन्हें छोड़ देती है।

अन्त्योदय (Wellness Center)

अन्त्योदय अन्य स्कूली शिक्षा प्रणाली से भिन्न स्कूल हैं जहां स्टेशन पर गुजर–बसर कर रहे, अनाथ बच्चों को खेल व अन्य गतिविधियों के माध्यम से पढ़ाया जाता हैं। इसके साथ ही साथ बच्चों में छिपी प्रतिभा को निखारने व उन्हें मंच देना का कार्य भी किया जा रहा हैं। जिससे बच्चों में परिवर्तन धीरे–धीरे दिख रहा हैं और बच्चे अब अन्त्योदय में बहुत सक्रिय रूप से शामिल हो रहे हैं।

जन्मोत्सव

शहर के माने–जाने जागरूक नागरिक अपने बच्चों का जन्मदिन मनाने के लिए सेफ सोसाइटी के पहल पर स्टेशन आकर सड़क किनारे गुजर–बसर कर रहे अनाथ बच्चों के साथ उन्हे अपनेपन का एहसास कराते हैं। उस दिन इन बच्चों के साथ सभी लोग एकसाथ भोजन करते हैं। यह अनूठी पहल सड़क के बच्चों को मुख्यधारा के बच्चों से जोड़ कर भेदभाव की बड़ी खायी को पाटती हैं।

Case Story 1- दिव्यांग में साहस भरती सेफ सोसाइटी

मूल रूप से दिल्ली की रहने वाली रूबी पिछले पांच साल से अधिक समय से गोरखपुर रेलवे स्टेशन पर रह रही हैं। वह देखने से लगभग 20 साल से कम उम्र की हैं, जबकि वह खुद को 30 का बताती है सेफ सोसाइटी से रूबी की मुलाकात गोरखपुर रेलवे स्टेशन के शौचालय के पास नशे में धुत हालत में हुई। आउट–रीच कर्मी शर्मिला, प्रकाशिनी तथा मनोज के सम्मिलित प्रयास से रूबी ने आर्ट बेस्ड प्रासेस में प्रतिभाग करते हुए आपनी आदत व व्यवहार में काफी सुधार किया। इस बीच सेफ सोसाइटी के कार्यकर्त्ताओं को पता चला कि यदि प्रयास किया जाए और सीखाया जाए तो रूबी गाना गा सकती हैं। प्रशिक्षण शुरू हुआ और रूबी स्टेज पर गाने योग्य हो गयी। रूबी को सेफ सोसाइटी द्वारा आयोजित बच्चों के एक कार्यक्रम में स्टेज पर गाने का मौका मिला। जहॉ उसके गानो को सुन कर नगर विधायक राधा मोहनदास अग्रवाल, कला संस्कृति मंत्रालय ग्राण्ट समिति के सदस्य हरी प्रसाद सिंह सहित दर्जनों गणमान्य लोगों ने इस प्रयास की सराहना की। नगर विधायक ने रूबी को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया।

शारीरिक रूप से दिव्यांग रूबी की दिनचर्या पिछले पाच वर्षों में यही रही हैं कि भोर में तड़के उठ कर प्लेटफार्म पर दातून बेचना और खाली समय में सेफ सोसाइटी के सदस्यों के साथ संगीत प्रशिक्षण व ए. बी. पी. में व्यस्त रहना। इसी बीच रूबी ने शादी का फैसला किया और पति के साथ बैंगलूर चली गयी। ठीक एक साल बाद रूबी पुनः गोरखपुर रेलवे स्टेशन पर वापस आ गयी। सेफ टीम की शर्मिला से मिली और बताया कि उसका एक बच्चा हैं और इसी अंतराल में एक बार उसका गर्भपात भी हो चुका हैं। अब वह फिर शराब पीने लगी थी। उसका पति उसे छोड़ चुका हैं। नवजात बच्चे को वह पीठ पर बैठा कर रेलवे प्लेटफार्म पर फिर से दातून बेचना शुरू कर दी। दिव्यांगता और सामाजिक उत्पीड़न से परेशान रूबी कुछ परेशान सी रहने लगी। एक दिन प्लेटफार्म नं. 1 के सामने कैब वे में जब वह दातून बेच रही थी कि एक तेज रफ़्तार बोलेरो से दुर्घटना की शिकार हो गयी। कोई मदद के लिए आगे नहीं बढ़ रहा था। स्टेशन पर गुजर बसर कर रहे लोगो, जिनके साथ जागरूकता कार्यक्रम में सेफ सोसाइटी ने आपात स्थिति में जरूरी फोन नम्बर का इस्तेमाल करने व फोन नम्बरों की जानकारी दी थी। उसका असर उस दिन दिखा और लोगों ने एम्बुलेन्स के लिए फोन किया। इस बीच सेफ सोसाइटी की ओ. आर. डब्ल्यू. प्रकाशनी को घटना की जानकारी मिली, तुरन्त वह एम्बुलेन्स के साथ रूबी को साथ लेकर सदर अस्पताल पहुचायी। लावारिस होने के कारण रूबी का इलाज सदर अस्पताल में होना कठिन हो गया। तब सेफ सोसाइटी रूबी का अभिभावक बनी और इस आधार पर प्रकाशनी रूबी की गार्जियन बन कर उसका इलाज शुरू करायी, रूबी को गोरखपुर बी. आर. डी. मेडिकल कॉलेज के आर्थो विभाग में रेफर कर दिया गया। जहॉ उसका बड़ा आपरेशन हुआ और उसे डॉक्टरो ने पुनः चलने लायक बनाया। आज रूबी स्वस्थ होकर अपने कर्णप्रिय गानों के साथ रोजमर्रा के कार्य करते हुए प्लेटफार्म पर दातून बेच रही हैं।

Case Story 2- राजा को मिली मंजिल

देवरिया जिले का रहने वाला बच्चा राजा आज अनाथ हैं। उसके बताने के मुताबिक, जब वह पैदा हुआ उसका परिवार काफी बड़ा था। परिवार में माँ थी, जो हमेशा बीमार रहती थी। राजा पाँच भाई है। परिवार का गुजर–बसर कबाड़ चुन कर चलता रहा। बाकि भाईयों का पता नहीं। राजा पिछले दो वर्ष से अपनी मॉ के साथ गोरखपुर स्टेशन पर आ गया। एक दिन राजा की माँ स्टेशन पर गिर पड़ी, सर पर गहरी चोट लगी। इलाज के अभाव में उसके सर में किड़े पड़ गये। वह मानसिक रूप से विक्षिप्त हो गयी और एक दिन गोरखपुर रेलवे प्लेटफार्म पर लावारिस मर गयी। माँ के बाद राजा की देखभाल करने वाला कोई नहीं था। सेफ सोसाइटी की शर्मिला से राजा की मुलाकात लगभग एक वर्ष पहले हुई। राजा ने शर्मिला को बताया कि उसके पिता टी.बी. व एड्स जैसी भयंकर बीमारी से ग्रसित हैं। इसी कारण उसे अपने पिता से अलग मॉ के साथ रहना पड़ता था। अब माँ भी नहीं रही और राजा अनाथ हो गया। शर्मिला ने राजा को अन्त्योदय से जोड़ कर पढ़ाना शुरू किया। राजा जल्दी ही ए.बी.पी. करने लगा। उसकी रूची बढ़ने लगी और वह सेफ सोसाइटी के कई मंच पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया, वह लाउडस्पीकर 90 एफ.एम. के स्टूडियो में स्टेशन के बच्चों की बेबाक राय भी रखा। उसकी प्रतिभा को देखते हुए सेफ सोसाइटी ने उसे उचित जगह भेजने के प्रयास शुरू कर दिए। जिससे उसकी प्रतिभा को मंच मिल सके और वह आगे पढ़ाई कर सके। इस बीच राजा के एक भईया और भाभी भी उसके प्रतिभा को देख कर अभिभावक के रूप में सामने आए। परिणाम स्वरूप अपना घर के डायरेक्टर रवि राय के माध्यम से आज राजा लखनऊ होम में पढ़ाई कर रहा हैं। सेफ सोसाइटी की ओर से बहुत शुभकामनाएँ।

हमारे सम्बल

''सेफ सोसाइटी का कार्य बहुत ही सराहनीय है। ये लोग फुटपाथ व सड़क पर गुजर–बसर करने वाले बच्चों के माहौल में जाकर स्तरीय सुधार कर रहे हैं, जो सराहनीय हैं। पुलिस ऐसे कृत्य में हर तरह का सहयोग करने के लिए आपके साथ हैं।''

डॉ0 सुनील कुमार गुप्ता
वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक
गोरखपुर

''सेफ सोसाइटी का कार्य सराहनीय है। इनके द्वारा आर्ट बेस्ड प्रॉसेस के जरिए बच्चों के व्यवहार में जो परिवर्तन लाने का प्रयास किया जा रहा हैं वह बहुत ही अनुकरणीय हैं। जो समाज में वास्तव में काम करता हैं, उसे समाज की चिंता ज्यादा होती है और समझ भी। इसलिए वह न केवल स्वयं बल्कि दूसरों को भी सलाह व सावधान करते रहते हैं। इसी क्रम में जब सेफ सोसाइटी द्वारा पुलिस प्रशिक्षण का प्रस्ताव रखा गया तो हमनें स्वीकार किया। समाजसेवा के क्षेत्र में इनकी ईमानदारी व कर्मठता बनी रहे। मेरी शुभकामनाएँ.....''

श्री अशोक कुमार वर्मा
एस.पी. क्राइम, नोडल ऑफिसर एस.जे.पी.यू.
व ए.एच.टी.यू, गोरखपुर

सेफ सोसाइटी सड़क पर रहने वाले बच्चों के हितार्थ कार्य कर रही है। एक जिम्मेदार व्यावसायिक प्रतिष्ठान होन के नाते हम आपके कार्यों में हमेशा समर्पित हैं।

जी.एम. रेडिसन ब्लू
गोरखपुर

''निर्वाना सरोवर पोर्टिको आपको सभी बच्चों को सशक्त बनाने और उनके सहयोग व समर्थन करने के लिए धन्यवाद देता है। शुभकामनाएं...''

जी.एम. निर्वाना सरोवर पोर्टिको
गोरखपुर

हमारे सम्बल

''फुटपाथ पर भटकते बच्चों को सतत प्रयास के माध्यम से सेफ सोसाइटी ने न केवल उन्हे शिक्षा के क्षेत्र में लाने का सराहनीय प्रयास किया हैं, बल्कि उन्हे रोजगार से भी जोड़ा हैं। इन बच्चों के द्वारा बनाए हुए क्रॉफ्ट बहुत खूबसूरत हैं। लोगों से मेरी अपील हैं कि इसकी सराहना के साथ–साथ यथोचित मूल्य देकर इसे खरीदें ताकि बच्चों व सोसाइटी का मनोबल बढ़े और वह देश के अच्छे नागरिक बने।''

श्रीमती अंजू चौधरी
उपाध्यक्ष, उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग
उत्तर प्रदेश

''मैं वास्तव में सेफ सोसाइटी के माध्यम से आपके द्वारा किए जा रहे सामाजिक कार्य की सराहना करता हूँ। मैं व्यक्तिगत रूप से सेफ सोसाइटी से जुड़ कर बहुत खुश हूँ। मुझे शामिल करने के लिए धन्यवाद.''

मुख्य चिकित्सा अधिकारी
गोरखपुर

सेफ सोसाइटी बच्चों के क्षेंत्र में निरन्तर अति उत्तम कार्य कर रही हैं एवं सेफ सोसाइटी के साथ–साथ कम्यूनिटी रेडियों के माध्यम से भी ऐसे बच्चों को जो अपने हुनर या व्यक्तिगत पहचान (कला) को लोगों के सामने नहीं ला पाते हैं उन्हे सेफ सोसाइटी (कम्यूनिटी रेडियों) के माध्यम से मंच प्रदान करने का कार्य कर रही हैं। साथ ही समय–समय पर रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन व झुग्गी झोपडी के बच्चों को, जिले के उच्चाधिकारियों के सामने उनके हुनर को प्रदर्शित करने का मौका मिलता हैं।

बाल संरक्षण अधिकारी
गोरखपुर

बच्चे देश के भविष्य होते हैं इन बच्चों के बचपन में इनके ऊपर कोई बुरा असर न पड़े इसकी जिम्मेदारी हम सभी जिम्मेदार नागरिकों की हैं। कुछ ऐसे भी बच्चे हमारे समाज में हैं जो किन्हीं कारणों से आज सड़क पर हैं, हम सबका कर्तव्य है कि उनका उचित देख–रेख एवं संरक्षण किया जाय। सेफ सोसाइटी यह पुनीत कार्य कर रही है। मैं हमेशा आपके इस प्रयास के साथ हूँ। ईश्वर आपको शुभ कार्यों में लगाये रखे।

श्रीमती अनीता जायसवाल
वरिष्ठ समाज सेवी गोरखपुर मण्डल

"अन्त्योदय"–सर्वश्रेष्ठ गतिविधियों में सेफ की गतिविधि शामिल

इण्डियन सोशल रिसपॉसिंबिलिटी नेटवर्क (ISRN) संस्था द्वारा भारत में समाज सेवा के क्षेत्र में अन्तिम व्यक्ति तक सेवाओं और योजनाओं को पहुचाने वाले सामाजिक संगठनों के उत्कृष्ट कार्य व व्यवहार का एक शोध संकलन भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से **"द विजन ऑफ अन्त्योदय"** प्रकाशित किया गया। पुस्तक का विमोचन भारत के महामहिम **उप–राष्ट्रपति श्री एम. वैंकेया नायडू** द्वारा 12 फरवरी, 2020 को उनके आवास सरदार वल्लभभाई पटेल हॉल में किया गया। इस अवसर पर राज्य सभा सदस्य तथा आई.सी.सी.आर. के अध्यक्ष डॉ विनय सहस्त्र बुद्धे व पुस्तक के संपादक संतोष गुप्ता सहित भारत के 150 समाजसेवी प्रतिनिधि इस पुस्तक के विमोचन कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

देशभर से उन संस्थाओं का इस पुस्तक में चयन किया गया जो प्रसिद्ध विचारक, दार्शनिक विद्वान पंडित दीनदयाल उपाध्याय के **अन्त्योदय** अर्थात**"अन्तिम व्यक्ति का उत्थान"** सिद्वान्त पर आधारित कार्य कर रहे हैं। सतत विकास की प्रक्रिया अपनाने वाले संस्थाओं तथा उनके नेतृत्व जिन्होने देश व समाज के विकास में अपने सामाजिक दायित्व का निर्वहन करते हुए सरकार व समुदाय को मजबूत किया, जिसे देश के विभिन्न हिस्सों में शोधार्थियों ने अपने मानक पर खरा पाते हुए इस पुस्तक में स्थान दिया। **"द विजन ऑफ अन्त्योदय"** के पेज संख्या 122–23 पर सेफ सोसाइटी द्वारा आर्ट बेस्ड थेरिपी के माध्यम से सड़क पर गुजर–बसर कर रहे बच्चों का मानसिक, सामाजिक परिवर्तन करने का प्रयास तथा उनके द्वारा रोजमर्रा के कार्यों में ही रोजगार ढूढ़ने के प्रयासो का उल्लेख किया गया हैं। फुटपाथ के बच्चों के समुदाय में जो परिवर्तन संस्था के प्रयास से हुआ उस में बच्चों की रूचि कबाड़ से बोतल चुनकर उन्हे खूबसूरत क्राफ्ट बनाने की ओर मुड़ी साथ ही वर्षों से नशे की लत में फँसे लगभग 100 किशोर, बच्चों में से 60 बच्चों को आर्ट बेस्ड प्रासेस के निरंतर प्रयास से नशामुक्त किया गया।

संसाधन विहीन बच्चों ने बनाई प्रेरणादायक "मूवी"

सेफ सोसाइटी ने फ्राँस की टीम के टेक्निकल सहयोग से 02 लघु फिल्म का प्रोडक्शन किया है। एक फिल्म समाज में बाल मजदूरी तथा दूसरी फिल्म बाल तस्करी के कारणों व इसके साधन के साथ ही वर्तमान परिदृश्य पर सोचने को मजबूर करती हैं। फिल्म के बाल कलाकार किसी तरह के प्रशिक्षित कलाकार नहीं हैं यह सभी सड़क पर गुजर–बसर करने वाले या सुदूर गाँव के किसी संसाधन विहीन समुदाय से आते हैं। उपरोक्त फिल्म को विश्व की सर्वश्रेष्ठ सामाजिक फिल्म (प्रशंसक वर्ग) सहित अनकों राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है।

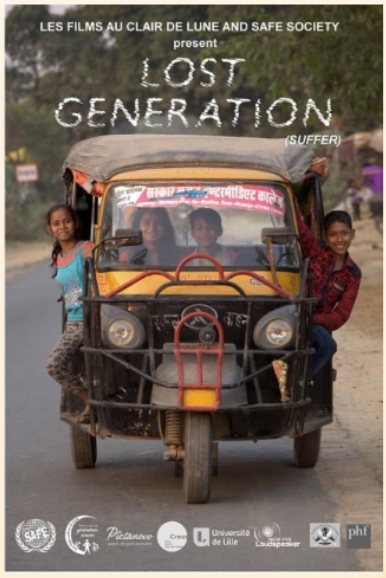

सेफ चाइल्ड राईट्स प्रोजेक्ट टीम

	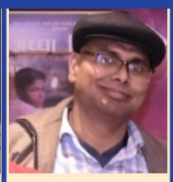						
विश्व वैभव शर्मा निदेशक	**ब्रजेश चतुर्वेदी** प्रोग्राम मैनेजर (चाइल्ड प्रोजेक्ट)	**मनप्रीत कौर** टेक्निकल डॉक्यूमेंटेसन ऑफिसर	**मनोज श्रीवास्तव** प्रोजेक्ट इन्चार्ज (लाइवलीहुड)	**अभिषेक वर्मा** फाईनेन्स हेड	**खुशबू चौरसिया** फाईनेन्स एवं एडमीन टीम मेम्बर	**शर्मिला गुप्ता** चाइल्ड सपोर्ट मेम्बर	**प्रकाशनी श्रीवास्तव** चाइल्ड सपोर्ट मेम्बर

दृष्टिकोण

हम एक ऐसे समाज की कल्पना करते हैं, जहॉ किसी के सामाजिक और आर्थिक मूल की पहचान किए बिना, संसाधन की पहुच से दूर समुदाय के लोगों के लिए पर्याप्त रास्ते सुलभ हों, उन्हे दृश्यमान निवासियों के रूप में पहचाना जाए।

लक्ष्य

सेफ सोसाइटी का मिशन समुदायों के बीच जागरूकता विकसित करना है, ताकि उन्हें सशक्त बनाया जा सके और उनके व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करने वाले सभी कारकों पर नियंत्रण पाने में उनकी मदद की जा सके।

धन्यवाद

सेफ सोसाइटी को यूनाइटेड नेशन के **आर्थिक और सामाजिक परिषद से विशेष सलाहकार** का दर्जा दिया गया हैं, और बच्चों के खिलाफ हिंसा को समाप्त करने के लिए वैश्विक साझेदारी की सदस्य हैं, साथ ही ह्यूमन लिबर्टी नेटवर्क के यू.पी. पार्टनर्स भी हैं।

सम्पर्क

सेफ सोसाइटी, मानस विहार कालोनी, निकट शारदा पैलेस,
संगम चौराहा, पादरी बाजार, गोरखपुर– 273014, उत्तर प्रदेश
ईमेल– safesociety1@gmail.com, www.safesociety.in

Published by SAFE SOCIETY, India with support of Paul Hamlyn foundation of U.K.
Printed @ Pratap Printing Press, Alambagh, Lucknow. 500 copies Published.

Copyright notice: Except the views expressed by the stakeholders, SAFE SOCIETY takes complete responsibility for the entire content of this news letter. The information and images of this document must not be reproduced without prior written permission and proper acknowledgment.